आनन्द कुमार त्रिपाठी
सहायक प्रोफेसर (इतिहास)
रोहतास महिला कालेज, सासाराम

बी० ए० (प्रतिष्ठा-इतिहास) द्वितीय वर्ष
प्रश्नपत्र - III

"पुष्यभूति वंश एवं हर्षवर्धन (606-647 ई०)"

गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद हरियाणा के अम्बाला जिले के थानेश्वर नामक स्थान पर 'पुष्यभूति वंश' की स्थापना हुई। यह वंश हूणों के साथ हुए अपने संघर्ष के कारण प्रसिद्ध हुआ। संभवतः प्रभाकरवर्धन इस वंश का चौथा शासक था। इसके विषय में जानकारी 'हर्षचरित' से मिलती है। प्रभाकरवर्धन दो पुत्रों राज्यवर्धन और हर्षवर्धन एवं एक पुत्री राज्यश्री का पिता था। पुत्री राज्यश्री का विवाह प्रभाकरवर्धन ने मौखरिवंश के ग्रहवर्मन से किया था।

पिता की मृत्यु के बाद राज्यवर्धन सिंहासनारूढ़ हुआ, पर शीघ्रती उसे मालवा के खिलाफ अभियान के लिए जाना पड़ा। अभियान की सफलता के उपरान्त लौटते हुए मार्ग में गौड़ के शशांक ने राज्यवर्धन की हत्या कर दी।

हर्षवर्धन (606-647 ई०)

राज्यवर्धन के बाद लगभग 606 ई० में हर्षवर्धन थानेश्वर के सिंहासन पर बैठा। हर्ष के विषय में हमें बाणभट्ट के 'हर्षचरित' से व्यापक जानकारी मिलती है। हर्ष ने लगभग 41 वर्ष शासन किया। इन वर्षों में हर्ष ने अपने शासन का विस्तार जालंधर, पंजाब, कश्मीर, नेपाल एवं बल्लभी तक कर लिया। इसने आर्यावर्त को भी अपने अधीन कर लिया। हर्ष को बादामी के चालुक्यवंशी शासक पुलकेशिन द्वितीय से पराजित होना पड़ा। ऐहोल प्रशस्ति (634 ई०) में इसका उल्लेख मिलता है।

यात्रियों में मण्डित राजकुमार, 'नीति का पण्डित' एवं वर्तमान शाक्यमुनि कहा जाने वाला चीनी यात्री 'ह्वेनसांग 630 से 640 के बीच भारत की धरती पर पदार्पण किया। हर्ष के विषय में ह्वेनसांग से विस्तृत जानकारी मिलती है। हर्ष ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया। हर्ष, एक और नाम 'शिलादित्य' से भी जाना जाता है। इसने परम भट्टारक मगध नरेश की उपाधि ग्रहण की।

Scanned with CamScanner

हर्ष को अपने दक्षिण के अभियान में असफलता हाथ लगी। चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष को ताप्ती नदी के किनारे परास्त किया। हर्ष एक प्रतिष्ठित नाटककार एवं कवि था। इसने नागानन्द, रत्नावली एवं प्रियदर्शिका नामक नाटकों की रचना की। इसके दरबार की बाण, मयूर, हरिदत्त एवं जयसेन जैसे प्रसिद्ध कवि एवं लेखक शोभा बढ़ाते थे। हर्ष बौद्ध धर्म की महायान शाखा का समर्थक होने के साथ-साथ विष्णु एवं शिव की भी स्तुति करता था। ऐसा माना जाता है कि हर्ष प्रतिदिन 500 ब्राह्मणों एवं 1000 बौद्ध भिक्षुओं को भोजन कराता था। हर्ष ने लगभग 643 ई० में कन्नौज तथा प्रयाग में दो विशाल धार्मिक सभाओं का आयोजन किया था। हर्ष द्वारा प्रयाग में आयोजित सभा को '<u>मोक्षपरिषद</u>' कहा गया है।

हर्ष का दिन तीन भागों में बंटा था — प्रथम भाग सरकारी कार्यों के लिए तथा शेष दो भागों में धार्मिक कार्य सम्पन्न किया जाता था। महाराजा हर्ष ने 641 ई० में एक ब्राह्मण को अपना दूत बनाकर चीन भेजा। 643 ई० में चीनी सम्राट ने ल्यांग-होआई-किंग नाम के दूत को हर्ष के दरबार में भेजा।

Scanned with CamScanner